VIDYA BHAVAN, BALIKA VIDYAPEETH

SHAKTI UTTHAN ASHRAM, LAKHISARAI, PIN:-811311

SUBJECT:- CCA **CLASS:-** XTH 'D' **DATE:**13/11/XX

CLASS TEACHER:- MR. NEEL NIRANJAN

CCA (INFORMATION & STORY ABOUT DEEPAWALI)

दिवाली या दीपावली

पृष्ठभूमि -

भारत त्योहारों का देश है , यहां हर वर्ष हर महीने अनेकों त्यौहार निरंतर मनाए जाते है। यहां तक की भारतीय हिंदू कैलेंडर के अनुसार हर एक दिन का अपना एक विशेष महत्व होता है। हर एक तिथि किसी न किसी विशेष अनुष्ठान के लिए उपयोगी व शुभ होती है। भारत में सभी धर्म के लोग रहते हैं। ऐसे में हिंदू ही नहीं अपितु सभी धर्म के लोग अपने - अपने धर्म के अनुसार त्योहारों को हर्षोल्लास के साथ मनाते हैं। जहां हिंदू समाज के लोग दीपावली , दशहरा , होली , रामनवमी आदि त्यौहार धूमधाम से मनाते हैं।

वही मुस्लिम समुदाय के लोग ईद , रमजान और मुहर्रम जैसे त्यौहार अपनी अपनी श्रद्धा के अनुसार अल्लाह को इबादत करते हैं। इसी क्रम में सिख समुदाय के लोग धर्मगुरु के जन्मोत्सव , प्रकाश पर्व , लोहड़ी शब्द कीर्तन आदि का त्यौहार मनाते हैं। ठीक इसी प्रकार अन्य धर्म के लोग भी अपने त्यौहार निर्बाध रूप से भारत में रहते हुए मनाते हैं और यह उनका मौलिक अधिकार भी है।

दीपावली शब्द की उत्पत्ति और कब मनाई जाती है -

दीपावली दो शब्दों के मेल से बना है , यह संस्कृत के शब्द दीवा + अवली , या दीप + अवली शब्दों के मेल से बना है , जिसका अर्थ है दीप की पंक्तियां।दीपावली कार्तिक मॉस की अमावस्या को मनाया जाता है।

दिवाली या दीपावली क्यों मनाई जाती है -

यूं तो भारतवर्ष में हरेक त्योहार के मनाए जाने के पीछे कोई ना कोई कारण अवश्य रहता है , ठीक उसी प्रकार दीपावली बुराई पर अच्छाई और असत्य पर सत्य की विजय तथा मर्यादा परुषोतम श्री राम के अयोध्या लौटने के हर्ष एवं उत्साह का प्रतीक है यह दीपावली। अयोध्या नरेश की पत्नी केकयी द्वारा मांगे गए दशरथ से वचन में राम को वनवास जाना पड़ता है। जहां उन्हें अनेक कठिनाइयों का सामना करते हुए चौदह वर्षों तक वन में अपना जीवन व्यतीत करना पड़ता है। वनवास के अंतिम वर्ष में मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम की भार्या (पत्नी) माता सीता का हरण दुराचरण करने वाले असुर रावण द्वारा किया जाता है।

रावण अपनी मुक्ति व सामाजिक प्रतिष्ठा के लिए यह सब घटना को अंजाम देता है।

राम अपनी पत्नी सीता की खोज में लंका पति रावण से अपनी पत्नी को लौटाने का आग्रह करते हैं , किंतु वह हठ और शक्ति के मद में अंधा होकर माता सीता को श्री राम के सुपुर्द नहीं करता जिसके कारण नर और असुर में घमासान युद्ध होता है।इस युद्ध में राम की अगुवाई में सामान्य नर और बानर भालू की सेना समस्त असुरों पर विजय प्राप्त करती है। राम लंका का राज - पाट रावण के भाई **विभीषण** को सौंप कर अयोध्या नगरी जब लौटते हैं।

अयोध्यावासी अपने राजा की चिर - प्रतिक्षा की पूर्ति होने पर हर्ष उत्साह के साथ पूरी अयोध्या नगरी को घी के दिए से रोशन कर देती है। अयोध्यावासीयों ने पुरे अयोध्या नगरी में रंगोली बनाकर अपने महाराज के आने पर हर्ष प्रकट किया। राजा के स्वागत में पूरी अयोध्या नगरी किसी अलकापुरी को भी मात देने को तत्पर थी ।अर्थात अयोध्या नगरी अपने राजा राम के चौदह वर्ष के वनवास को पूरा कर अयोध्या लौटने पर अपनी खुशी के दीप जलाकर व गीत गाकर उत्साह मनाते हुए स्वागत करती है , तब से दीपावली का पर्व निरंतर मनाया जाता है ।

दिवाली या दीपावली से जुड़ी पौराणिक मान्यता -

दीपावली पर्व प्रकाश का पर्व है , दीया को सूर्य का प्रतीक माना जाता है। पद्म पुराण अथवा स्कंद पुराण आदि ग्रंथों में इसका जिक्र मिलता है। छोटी दीपावली के दिन लोग **यम** का दीया घर से बाहर रात को निकालते हैं। जिसके पीछे की मान्यता यह है कि नचिकेता के प्रश्नों से यम परेशान हो जाते हैं और नचिकेता जीवित स्वर्ग लोग पहुंच जाते हैं। यह घटना कितनी ही पुरानी अपनी उपनिषद में दर्ज है।

इसी दिन श्री कृष्ण ने **नरकासुर** नामक दैत्य का इसी दिन संहार किया था।

जैन धर्म के अनुसार इसी दिन भगवान महावीर स्वामी का परिनिर्वाण दिवस दी है।

सिख धर्म के अनुसार परम पवित्र स्वर्ण मंदिर गुरुद्वारे पर स्वर्ण कलश की स्थापना इसी दिन हुई थी।

दिवाली या दीपावली का सामाजिक संदर्भ -

भारतीय त्योहार किसी भी घटना या संदर्भ से जुड़ा हो किंतु उससे जुड़ी एक महत्वपूर्ण बात सदैव रहती है। हर एक त्यौहार में भारतीय लोग स्वच्छता का विशेष ध्यान रखते हैं।
श्रद्धालु निर्मल व स्वच्छ मन से अपने घर आसपास के परिवेश वातावरण को स्वस्थ , निर्मल बनाने का भरसक प्रयास करते हैं।
दीपावली वर्ष में एक बार मनाया जाने वाला पर्व है , इसमें भारतीय हिंदू समाज के लोग अपने घर को अथवा उनसे जुड़ी उन सभी हर एक पहलू में नवीनता का समावेश करते हैं। दीपावली में लोग नए वस्त्र , घर की सामग्री बर्तन आदि खरीदते हैं। जिससे उनका मानना है कि ऐसा करने से उनके घर लक्ष्मी का सदैव वास रहता है , भंडार भरा रहता है। अपने घर कार्यालय आदि में रंग रोगन करते हैं , बर्तन आदि जो नित्य उपयोगी वस्तु उन्हें खरीदते है।
उन सभी को साफ - सफाई करके उन्हें स्थापित किया जाता है।
सभी लोग लक्ष्मी गणेश का पूजन कर एक - दूसरे को शुभकामनाएं देते हैं , अथवा प्राप्त करते हैं। अपने घरों में बिजली के जगमगाते झूमर बल्ब आदि से सजाते हैं और घी के दिए जलाते हैं। तदुपरांत सभी मिलकर दीपावली में विशेष रूप से पटाखे फुलझड़ियां आदि जलाकर वातावरण में प्रकाश का संचार करते हैं।

दिवाली या दीपावली **से जुड़ी क्षेत्रीय पूजन विधि -**

दीपावली में गणेश - लक्ष्मी जी की पूजा की जाती है यह मान्यता है , कि दीपावली में धन - लक्ष्मी की पूजा की जाती है। इनकी पूजन व सिद्धि से साधक को कभी धन - हानि नहीं होती है। उसका भंडार सदैव भरा रहता है। इसी परंपरा में भारतीय लोग छोटे से घर (हैट्रिक , घरौंदा) का निर्माण करते हैं। उसमें गणेश लक्ष्मी को निवास करवाते हैं , और कुल्लड़ में खील - बताशे व मिठाइयां भरते हैं। खिल - बताशे से पूजा करने की मान्यता है कि जिस प्रकार यह कुल्लड़ भरा हुआ है , ठीक इसी प्रकार हमारा घर भी धन - संपदा व वैभव से सदैव भरा रहे।

लोग अपने घर में रंगोली बनाते हैं। रंगोली खुशी का प्रतीक है , रंगोली में जिस प्रकार सभी रंगों का मिश्रण रहता है , ठीक उसी प्रकार याचक व साधक के जीवन में भी सभी रंगो का समावेश रहे। उनका जीवन भी रंग से परिपूर्ण हो , जीवन में रंग से आज से खुशहाली व उन्नति से है बेरंग सा जीवन बेकार माना जाता है। इसलिए रंगोली घर में अथवा बाहर प्रांगण में बनाकर लोग गणेश - लक्ष्मी का स्वागत करते है|